Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 17, Issue No. 2, October-2020, ISSN 2230-7540

प्राथमिक विद्यालय स्तर पर बिजनौर जनपद के शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

Arti Shukla[1]* Dr. S. K. Mahto[2]

[1] Research Scholar, Shri Venkateshwara University, Uttar Pradesh

[2] Research Supervisor, Shri Venkateshwara University, Uttar Pradesh

सार – *प्राचीनकाल में शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान को अर्जित करना संग्रहित करना रचित करना प्रसारित करना अथवा प्रदान करना होता था। इसके साथ ही उन्हें आध्यात्मिक और धार्मिक क्रिया-कलापों में सक्रिय रूप से मार्गदर्शन व सहयोग देना होता था। आज शिक्षा का अर्थ है- अध्ययन। अध्ययन ही अब शिक्षा अर्थ रह गया है जबकि शिक्षा का मूल उद्देश्य है - शारीरिक मानसिक और भावात्मक विकास करना। शिक्षा के साथ मूल्य भी अनिवार्य रूप से जुड़े हुए हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि बिना मूल्य के शिक्षा का कोई औचित्य नहीं है। अतः मूल्य विहीन शिक्षा निरर्थक है। शिक्षा के तात्पर्य मूलतः व्यक्तित्व के समग्र विकास से है।*

----------X----------

समस्या का औचित्य

मूल्यपरक शिक्षा का ध्येय व्यक्ति को सहायता प्रदान करना है जिससे कि वह कार्य करने के लिए स्वतंत्र और प्रभावशाली व्यक्तित्व का विकास कर सकें तथा राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक जीवन में सृजनात्मक रूप से भागीदारी निभा सके। मूल्यपरक शिक्षा व्यक्ति को यह क्षमता प्रदान करती है कि वह शीघ्रता से बदलते हुए सामाजिक जीवन का मुकाबला कर सकें तथा वैज्ञानिक आविष्कारों तथा जनसंचार से उत्पन्न समस्याओं के लिए तैयार हो सके और विश्व की समस्याओं के प्रति राष्ट्रीय दृष्टिकोण की अपेक्षा सार्वभौमिक दृष्टिकोण अपना सके। अतः बालकों में रूचिपूर्ण ढंग से विभिन्न शैक्षिक मूल्यों को उनेक आचरण में विकसित करने पर ध्यान देना चाहिए। चूंकि श्रेष्ठ मानवीय मूल्य ही किसी देश की श्रेष्ठता के परिचायक होते हैं।

शोध विषय का चयन

भारत गाँव का देश है तथा 70 प्रतिशत भारतीय लोग गावों में निवास करते है। गाँव की प्रारम्भिक एवं निम्नतम इकाई व्यक्ति होता है। व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज, समाज से राष्ट्र के स्वरूप को मूर्त रूप मिलता है। ग्रामीण परिवेश से ही भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों का प्रारम्भ माना गया हैं जो कालान्तर में भारत में ही नही अपितु विश्व में अपनी सर्वोच्चता के लिए प्रसिद्ध हुई है। शोधार्थी ने वर्तमान परिवेश, परिस्थिति एवं भारतीय मूल्यों की उपादेयता को देखते हुए साथ ही साथ भारतीय संस्कृति की चेतना को जनमानस में झंकृत करने के लिए प्रस्तुत शोध विषय का चयन किया है।

समस्या कथन

अध्ययन की समस्या को संक्षिप्त रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है- ''प्राथमिक विद्यालय स्तर पर बिजनौर जनपद के शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन''।

शोध में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण:-

प्राथमिक विद्यालय स्तरः- प्राथमिक विद्यालय स्तर के अन्तर्गत कक्षा-1 से लेकर कक्षा-5 तक के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जाता है, तथा कक्षा-1 से कक्षा-5 तक की

शिक्षा जहाँ प्रदान की जाती है, उसे प्राथमिक विद्यालय के नाम से जाना गया है।

बिजनौर जनपदः- प्रदेश के मुरादाबाद मण्डल के 05 जनपदों में से 01 जनपद का नाम बिजनौर है। बिजनौर के पूरव में उत्तराखण्ड पौडी गढ़वाल, उधसिंह नगर, पश्चिम में मैरठ तथा मुजफ्फनगर, उत्तर में हरिद्वार तथा दक्षिण में अमरौहा, मुरादाबाद स्थित है। बिजनौर जनपद की जनसंख्या 3683896 (पुरूष-1921215 तथा महिला-1761498) है। बिजनौर जनपद का लिंगानुपात 913, सांक्षरता दर 70.43 तथा जनसंख्या वृद्धि दर 17.64 प्रतिशत है। यहा की कुल भौगोलिक क्षेत्र 449 स्कवायर किलो मीटर है। यहाँ की समस्त जनसंख्या में हिन्दु 55.18, मुस्लिम 43.04, सिंख 1.37, जैन 0.17 तथा जनजाति जौनसारी 0.04 प्रतिशत है। बिजनौर जनपद में 05 तहसील तथा 11 प्रखण्ड है। यहाँ 03 लोकसभा क्षेत्र हैं जिसमें एक पूर्ण संसदीय क्षेत्र (नगीना) तथा 02 खण्डित लोकसभा क्षेत्र (बिजनौर तथा अफजल) संसदीय क्षेत्र के साथ-साथ 08 विधानसभा क्षेत्र- (नजीवाबाद, धामपुर, नगीना, बढापुर, चाँदपुर, नुरपुर, बिजनौर तथा नैहटौर) है। बिजनौर जनपद में 1791 प्राथमिक विद्यालय तथा 821 माध्यमिक विद्यालय है जिसमें वित्तीय सहायता प्राप्त 56 माध्यमिक विद्यालय है।

शहरी एवं ग्रामीणः- जहाँ पर सुविधा की समस्त चीजें उपलब्ध होती हैं और जहाँ के लोग सुव्यवस्थित ढंग से रहकर अपना जीवन यापन करते हैं उस क्षेत्र को शहरी क्षेत्र के नाम से सम्बोधित किया गया है तथा ग्रामीण परिवेश जहाँ पर सुविधाओं के अभाव को झेलते हुए लोग निवास करते हैं उसे ग्रामीण क्षेत्र के रूप में सम्बोधित किया गया है।

अध्यापकः- "अध्यापक वह है जो छात्रों के ज्ञानोपार्जन में सहायक होता है, छात्रों का सर्वागीण विकास करता है, उनकी सामाजिक समस्याओं को पूरा करने में सहायता प्रदान करता है। अध्यापक का कार्य शिक्षा देना होता है तथा अच्छा अध्यापक वह समझा जाता है जो शिक्षण देने में व्यवहार कुशल हो।"

मूल्यः- मूल्य से अभिप्राय किसी वस्तु की कीमत या उपयोगिता से है। भावात्मक दृष्टि से यह मानव के गुण को भी व्यक्त करता है। मूल्य से तात्पर्य शिक्षा प्रद अच्छे गुण और सद्आचरण से हैं। यह मनुष्य के जीवन तथा समाज के प्रत्येक आयाम से सम्बन्धित होते हैं तथा मनुष्य की इच्छाओं और आकांक्षाओं को नियंत्रित करने का श्रेष्ठ साधन है। मूल्य व्यक्ति या समूह को भौतिक एवं सामाजिक रूप से समायोजित करने का एक मात्र साधन है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के लिये शोधकर्ती ने निम्न उद्देश्यों को निर्धारित किया है-

1. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत सभी अध्यापकों के समग्र मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
2. बिजनौर जनपद प्राथमिक स्तर के महिला पुरुष अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
3. बिजनौर जनपद प्राथमिक स्तर के महिला व पुरुष अध्यापकों के आर्थिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
4. बिजनौर जनपद प्राथमिक स्तर के महिला व पुरुष शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक/कलात्मक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
5. बिजनौर जनपद प्राथमिक स्तर के पुरुष व महिला अध्यापकों के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
6. बिजनौर जनपद प्राथमिक स्तर के महिला व पुरुष अध्यापकों के राजनैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
7. बिजनौर जनपद प्राथमिक स्तर के महिला व पुरुष अध्यापकों धार्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
8. बिजनौर जनपद प्राथमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी अध्यापकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
9. बिजनौर जनपद प्राथमिक स्तर में शहरी व ग्राणीण अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
10. बिजनौर जनपद प्राथमिक स्तर के शहरी ग्रामीण अध्यापकों के आर्थिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।

www.ignited.in

11. बिजनौर जनपद प्राथमिक स्तर के शहरी ग्रामीण अध्यापकों के सौन्दर्यत्मक/कलात्मक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।

12. बिजनौर जनपद प्राथमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।

13. बिजनौर जनपद प्राथमिक स्तर के शहरी ग्रामीण अध्यापकों के राजनैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।

14. बिजनौर जनपद प्राथमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।

शोध परिकल्पाएँ

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित परिकल्पनाओं को समाहित कर सत्यापन किया जायेगा-

1. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर के सभी महिला एवं पुरूष अध्यापकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।

2. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

3. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर पुरुष व महिला अध्यापकों के आर्थिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।

4. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक/कलात्मक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

5. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला अध्यापकों के सामाजिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

6. बिजनौर जनपद क्षेत्र मे प्राथमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला अध्यापकों राजनैतिक मूल्यों मध्य सार्थक अन्तर नहीं हैं।

7. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

8. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं हैं।

9. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के सौद्धान्तिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

10. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के आर्थिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

11. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य के मध्य सार्थक अन्तर नहीं हैं।

12. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के सामाजिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

13. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के राजनैतिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

14. बिजनौर जनपद क्षेत्र के प्राथमिक स्तर पर शहरी ग्रामीण अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर हैं।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है। यह शैक्षिक समस्याओं को हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है तथा उन्हें हल करने की विधियो की ओर संकेत करती है।

उपकरण

उपकरण के रूप में डॉ. शमीम करीम द्वारा निर्मित "अध्यापक मूल्य अनुसूची" (Teacher Value Inventory) को लिया गया है।

अध्ययन की परिसीमाएं

प्रस्तुत अध्ययन की सीमायें बिजनौर जनपद को निर्धारित किया गया है। बिजनौर जनपद के अन्तर्गत 05 तहसील तथा 11 प्रखण्ड स्तर के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों को ही इस शोध के अध्ययन हेतु सम्मिलित किया गया है तथा उनसे प्राप्त दत्तों के आधार पर शोध निष्कर्ष निकाले गये हैं।

न्यादर्श का चयन

प्रस्तुत अध्ययन में बिजनौर जनपद के विभिन्न तहसीलों यथा बिजनौर, नजीबाबाद, धामपुर, नगीना और चाँदपुर में शहरी प्राथमिक स्तर के कुल 83 अध्यापकों का चयन किया तथा बिजनौर जनपद के विभिन्न तहसीलो यथा बिजनौर, नजीबाबाद, धामपुर, नगीना और चाँदपुर में ग्रामीण प्राथमिक स्तर के कुल 92 अध्यापकों का चयन किया अर्थात शोधार्थी ने अपने अध्ययन में बिजनौर जनपद के सभी तहसीलों को मिलाकर कुल 175 अध्यापकों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया है, जिसका विवरण इस प्रकार है -

तालिका- 3.1 अ

क्षेत्र के सन्दर्भ में अध्यापकों की संख्या

क्र. सं.	तहसील का नाम	शहरी क्षेत्रीय विद्यालयों का नाम	अध्यापकों की संख्या	कुल अध्यापकों की संख्या
1.	बिजनौर	प्राथमिक विद्यालय काजीपाड़ा, प्रथम	06	18
		प्राथमिक विद्यालय नई बस्ती, चतुर्थ	06	
		प्राथमिक विद्यालय पुलिस लाईन	06	
2.	धामपुर	प्राथमिक विद्यालय लक्ष्मीबाई	06	16
		प्राथमिक विद्यालय अफजलगढ़ प्रथम	05	
		प्राथमिक विद्यालय शरीजली नायडू	05	
3.	नजीबाबाद	प्राथमिक विद्यालय जाबागंज	05	17
		प्राथमिक विद्यालय सेवाराम	06	
		प्राथमिक विद्यालय सन्तोंमालन	06	
4.	नगीना	प्राथमिक विद्यालय विश्नोई सराय प्रथम	05	16
		प्राथमिक विद्यालय लुहारी सराय द्वितीय	06	
		प्राथमिक विद्यालय पटेरी	05	
5.	चाँदपुर	प्राथमिक विद्यालय कोटला	06	16
		प्राथमिक विद्यालय पतियापाड़ा – 1	05	
		प्राथमिक विद्यालय कायस्थान	05	
योग				83

तालिका- 3.1 ब

क्षेत्र के सन्दर्भ में अध्यापकों की संख्या

क्र. सं.	तहसील का नाम	ग्रामीण क्षेत्रीय विद्यालयों का नाम	अध्यापकों की संख्या	कुल अध्यापकों की संख्या
1.	बिजनौर	प्राथमिक विद्यालय जमालपुर पठानी	06	20
		प्राथमिक विद्यालय मंडावली सैदू	07	
		प्राथमिक विद्यालय बादशाहपुर, तरीकम	07	
2.	धामपुर	प्राथमिक विद्यालय भिक्कावाला प्रथम	06	19
		प्राथमिक विद्यालय चौहड़वाला	07	
		प्राथमिक विद्यालय पैगम्बरपुर	06	
3.	नजीबाबाद	प्राथमिक विद्यालय अकबरपुर चौगावा	06	18
		प्राथमिक विद्यालय महावतपुर बिल्लौच	06	
		प्राथमिक विद्यालय मलूकवाली	06	
4.	नगीना	प्राथमिक विद्यालय पुरैनी प्रथम	06	17
		प्राथमिक विद्यालय रायपुर सादात प्रथम	05	
		प्राथमिक विद्यालय हरगनपुर	06	
5.	चाँदपुर	प्राथमिक विद्यालय हसुपुरा प्रथम	06	18
		प्राथमिक विद्यालय फीना प्रथम	06	
		प्राथमिक विद्यालय हसुपुरा द्वितीय	06	
योग				92

तालिका- 3.2 अ

आयु के सन्दर्भ में अध्यापकों की संख्या

क्र. सं.	तहसील का नाम	शहरी क्षेत्रीय विद्यालयों का नाम	21–35 वर्ष के शिक्षक	35–65 वर्ष के शिक्षक	कुल संख्या
1.	बिजनौर	प्राथमिक विद्यालय काजीपाड़ा, प्रथम	02	03	16
		प्राथमिक विद्यालय नई बस्ती, चतुर्थ	02	04	
		प्राथमिक विद्यालय पुलिस लाईन	02	03	
2.	धामपुर	प्राथमिक विद्यालय लक्ष्मीबाई	02	04	18
		प्राथमिक विद्यालय अफजलगढ़ प्रथम	02	04	
		प्राथमिक विद्यालय शरीजली नायडू	03	03	
3.	नजीबाबाद	प्राथमिक विद्यालय जाबागंज	02	02	13
		प्राथमिक विद्यालय सेवाराम	02	02	
		प्राथमिक विद्यालय सन्तोंमालन	02	03	
4.	नगीना	प्राथमिक विद्यालय विश्नोई सराय प्रथम	02	02	12
		प्राथमिक विद्यालय लुहारी सराय द्वितीय	02	02	
		प्राथमिक विद्यालय पटेरी	02	02	
5.	चाँदपुर	प्राथमिक विद्यालय कोटला	01	01	07
		प्राथमिक विद्यालय पतियापाड़ा – 1	01	02	
		प्राथमिक विद्यालय कायस्थान	01	01	
योग			28	38	66

तालिका- 3.2 ब

आयु के सन्दर्भ में अध्यापकों की संख्या

क्र. सं.	तहसील का नाम	ग्रामीण क्षेत्रीय विद्यालयों का नाम	21–35 वर्ष के शिक्षक	35–65 वर्ष के शिक्षक	कुल संख्या
1.	बिजनौर	प्राथमिक विद्यालय जमालपुर पठानी	03	05	26
		प्राथमिक विद्यालय मंडावली सैदू	03	06	
		प्राथमिक विद्यालय बादशाहपुर, तरीकम	03	06	
2.	धामपुर	प्राथमिक विद्यालय भिक्कावाला प्रथम	03	05	22
		प्राथमिक विद्यालय चौहड़वाला	03	04	
		प्राथमिक विद्यालय पैगम्बरपुर	03	04	
3.	नजीबाबाद	प्राथमिक विद्यालय अकबरपुर चौगावा	03	03	19
		प्राथमिक विद्यालय महावतपुर बिल्लौच	03	04	
		प्राथमिक विद्यालय मलूकवाली	03	03	
4.	नगीना	प्राथमिक विद्यालय पुरैनी प्रथम	03	05	24
		प्राथमिक विद्यालय रायपुर सादात प्रथम	03	05	
		प्राथमिक विद्यालय हरगनपुर	03	05	
5.	चाँदपुर	प्राथमिक विद्यालय हसुपुरा प्रथम	02	04	18
		प्राथमिक विद्यालय फीना प्रथम	02	04	
		प्राथमिक विद्यालय हसुपुरा द्वितीय	03	03	
योग			43	66	109

तालिका- 3.3 अ

जाति के सन्दर्भ में अध्यापकों की संख्या

क्र. सं.	तहसील का नाम	शहरी क्षेत्रीय विद्यालयों का नाम	सामान्य	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति	पिछड़ी जाति	कुल संख्या
1.	बिजनौर	प्राथमिक विद्यालय काजीपाड़ा I	03	01	01	02	20
		प्राथमिक विद्यालय नई बस्ती, IV	03	01	01	01	
		प्राथमिक विद्यालय पुलिस लाईन	03	01	01	02	
2.	धामपुर	प्राथमिक विद्यालय लक्ष्मीबाई	03	01	00	02	19
		प्राथमिक विद्यालय अफजलगढ़ I	03	01	00	02	
		प्राथमिक विद्यालय शरीजली नायडू	02	01	01	02	
3.	नजीबाबाद	प्राथमिक विद्यालय जाबागंज	02	01	01	02	17
		प्राथमिक विद्यालय सेवाराम	02	01	02	02	
		प्राथमिक विद्यालय सन्तोंमालन	02	01	01	02	
4.	नगीना	प्राथमिक विद्यालय विश्नोई सराय I	02	01	00	01	16
		प्राथमिक विद्यालय लुहारी सराय II	02	01	01	02	
		प्राथमिक विद्यालय पटेरी	02	01	01	02	
4.	नगीना	प्राथमिक विद्यालय विश्नोई सराय I	02	01	00	01	16
		प्राथमिक विद्यालय लुहारी सराय II	02	01	01	02	
		प्राथमिक विद्यालय पटेरी	02	01	01	02	
5.	चाँदपुर	प्राथमिक विद्यालय कोटला	02	01	01	01	14
		प्राथमिक विद्यालय पतियापाड़ा I	02	01	01	01	
		प्राथमिक विद्यालय कायस्थान	02	01	00	01	
योग			35	15	10	25	85

www.ignited.in

तालिका- 3.3 ब

जाति के सन्दर्भ में अध्यापकों की संख्या

क्र. सं.	तहसील का नाम	ग्रामीण क्षेत्रीय विद्यालयों का नाम	सामान्य	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति	पिछड़ी जाति	कुल संख्या
1	बिजनौर	प्राथमिक विद्यालय जमालपुर फाजली	03	01	01	03	20
		प्राथमिक विद्यालय मंडावली गैलू	03	01	01	02	
		प्राथमिक विद्यालय बारवालपुर, तलिकन	02	01	01	03	
2	धामपुर	प्राथमिक विद्यालय शिवबाला प्रथम	02	01	01	03	20
		प्राथमिक विद्यालय [illegible]	02	01	01	03	
		प्राथमिक विद्यालय निम्मनपुर	03	01	01	01	
3	नजीबाबाद	प्राथमिक विद्यालय अकबरपुर चौगावा	02	01	01	02	18
		प्राथमिक विद्यालय महावतपुर बिल्सौन	03	01	01	01	
		प्राथमिक विद्यालय मथुरावाली	03	01	01	01	
4	नगीना	प्राथमिक विद्यालय पुरैनी I	02	01	01	01	18
		प्राथमिक विद्यालय ठाकुर सादात प्रथम	03	01	01	01	
		प्राथमिक विद्यालय हरभगपुर	02	01	01	01	
5	चांदपुर	प्राथमिक विद्यालय हसुपुर प्रथम	02	01	01	01	14
		प्राथमिक विद्यालय सैला I	02	01	01	01	
		प्राथमिक विद्यालय हसुपुर द्वितीय	01	01	01	01	
		योग	35	15	15	25	90

तालिका-3.4

अध्यापकों की संख्या

क्षेत्र	पुरुष अध्यापकों की सं.	महिला अध्यापकों की सं.	योग
बिजनौर शहरी	83	92	175
योग	83	92	175

विद्यालय	ग्रामीण अध्यापकों की संख्या	शहरी अध्यापकों की संख्या	योग
बिजनौर ग्रामीण	109	66	175
योग	109	66	175

उपकरणों का वितरणः- अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखकर जो उपकरण (ज्वववसे) प्रयोग हेतु लिये गये हैं, वह "अध्यापक मूल्य अनुसूची" (Teacher Value Inventory) डॉ. समीम करीम द्वारा प्रतिपादित अनुसूची है, जो "All Part Vermon" पर आधारित है। इस अध्यापक मूल्य अनुसूची (TVI) का जो प्रयोग किया गया हैं, वह भारत में नियुक्त अध्यापकों के लिये किया गया हैं, यह हिन्दी तथा अंग्रेजी में तैयार किया गया हैं और इसमें 63 विषय वस्तु है। डॉ. समीम करीम का यह अध्यापक मूल्य अनुसूची एक ऐसा उपागम है, जो अध्यापक के 7 प्रकार के मूल्यों को निर्धारित करता है और उसका मूल्यांकन करता है, जो निम्नलिखित हैं - 1. सौंदर्य शास्त्र 2. सैद्धान्तिक 3. धार्मिक 4. सामाजिक 5. आर्थिक 6. राजनैतिक 7. सम्पूर्ण मूल्य, (सुखवादी) जैसी कि हम जानते है, प्रत्येक व्यक्ति मूल्यों की पद्धति या व्यवस्था से प्रेरित होते है, किसी एक के व्यक्तित्व का अध्ययन मूल्यों से किया जा सकता है, उसका बड़ा विस्तार हो सकता है।वर्तमान परिसूची सात प्रकार के मूल्यों के मापन के लिए बनाई गई है। इस परिसूची का निर्माण विशेष रूप से अध्यापकों के प्रयोगार्थ किया गया था तथा इसमें अध्यापकों के न्यादर्श को लिया जाता है। इस प्रविक्षण के एकाशों को आलपोर्ट की मूल्यों की मापनी व गिलानी, मूल्य मापनी परीक्षण।

परिक्षण की विश्वसनीयताः- इस परीक्षण की वैधता का गुणांक ज्ञात करने के लिये, अर्द्धविच्छेद व कुडर, रिर्चडसन विधि का प्रयोग किया गया है। निम्न तालिका द्वारा विश्वसनीयता गुणांक ज्ञात करने की विधियों पर प्रकाश डाला गया है।

मूल्य	अर्द्धविच्छेद विधि	कूडर रिर्डसन विधि
सैद्धान्तिक मूल्य	.69	.64
सौन्दर्यात्मक मूल्य	.76	.78
धार्मिक मूल्य	.66	.71
राजनैतिक मूल्य	.69	.75
सामाजिक मूल्य	.68	.65
आर्थिक मूल्य	.74	.69
सुखवादी मूल्य	.72	.76
योग	.72	.78

परीक्षण की वैधताः- प्रस्तुत परीक्षण की वैधता ज्ञात करने के लिए वर्तमान अनुसूची का आहलूवालिया और सिद्व के परीक्षणों के साथ सहसम्बन्ध ज्ञात किया गया तथा 200 माध्यमिक छात्रों का इसका आयोजन लिया गया परीक्षण वैधता गुणांक 84 ज्ञात हुआ।निम्न तालिका द्वारा मूल्यों का विभिन्न क्षेत्रों में सहसम्बन्ध को दर्शाता गया है-

मूल्य	सैद्धान्तिक	सौन्दर्यात्मक	धार्मिक	राजनैतिक	समाजिक	आर्थिक
सौन्दर्यात्मक	-.42	–	–	–	–	–
धार्मिक	-.48	+.34	–	–	–	–
राजनैतिक	-.34	-.39	52	+.54	–	–
आर्थिक	+.50	+.37	+.63	+.59	+.47	–
सुखवादी	+.36	+.36	+.28	+.39	+.31	–

फंलाकनः- प्रत्येक एकांश के लिए पांच विकल्प दिये गये है जिसमें से उपयुक्त विकल्प का चयन करना है यह विकल्प है- अत्यधिक सहमत, सहमत, साधारण सहमत, असहमत, पूर्णतया असहमत, प्रत्येक प्रत्युत्तर में 5,4,3,2,1 क्रमशः अंक प्रदान किये जायेगंे।

प्रदत्त एकत्रीकरण प्रक्रियाः- प्रस्तुत शोध में प्रदत्त एकत्रीकरण की प्रक्रिया निम्न प्रकार से अपनाई गयी हैं -

- सर्वप्रथम शोधार्थी ने बिजनौर जनपद के अन्तर्गत पडने वाले विभिन्न तहसीलों के शहरी एवं ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों की सुची तैयार की।
- चयनित प्राथमिक विद्यालयो के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं से प्रदत्त सामग्री का संग्रहण किया।

प्रयुक्त सांख्यिकी विश्लेषण योजनाः- सांख्यिकी अनुसंधान का मूल आधार है। अतः सांख्यिकी आवश्यकता आँकड़ो के विश्लेषण के साथ आँकड़ो के संकलन में भी पड़ती है। अनुसंधान प्रक्रम में प्राप्त आँकड़ो को प्रस्तुतिकरण तथा

व्यवस्थापन के पश्चात् विभिन्न सांख्यिकी मापों की गणना की आवश्यकता पड़ती हैं।

यहाँ पर प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के मूल्यों का अध्ययन किया गया है जिसे तालिका संख्या 4.1 के द्वारा दर्शाया गया है।

तालिका संख्या - 4.1

प्राथमिक स्तर पर अध्यापकों के समग्र मूल्यों का अध्ययन

शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक	क्रांतिक मान
पुरुष	83	43.12	5.30	3.87
महिला	92	42.40	5.93	

तालिका 4.1 में प्रदर्शित परिणामों का गहनतापूर्वक अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि प्राथमिक पर पुरुष अध्यापकों के समग्र मूल्यों का मध्यमान 43.12 है, तथा महिला अध्यापकों का मध्यमान 42.40 है, एवं मानक विचलन क्रमशः 5.30 व 5.93 है, दोनों वर्ग के अध्यापकों के मध्य क्रांतिक अनुपात 3.87 है, जो .05 व .01 स्तर पर सार्थक है। अतः परिकल्पना नं. 1 "प्राथमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला अध्यापकों के समग्र मूल्यों के सार्थक नहीं है", को अस्वीकृत किया जाता है।

सैद्धान्तिक मूल्य: भारतीय सांस्कृतिक धरोहर आदर्शों, मान्यताओं, सिद्धान्तों और परम्पराओं पर टिकी हुई है जो मानवीय शक्ति को सुरक्षित रखने में अधिक सक्रिय है। हमारी युवा पीढ़ी का विकास पूर्णतया तभी संभव है जब तक हम उनका सही मार्गदर्शन करते हैं और उन्हें जीवन के उन व्यवहारिक और सैद्धान्तिक पक्षों से अनुभूति कराते रहते हैं। आज का बालक इसी सैद्धान्तिक मूल्यों से परिचित होकर भावी भारत का निर्माण कर उसे सुरक्षित भी रख पायेगा अन्यथा वह अपनी संस्कृति, दर्शन, चिन्तन और दृढ़ सिद्धान्तों से अनभिज्ञ रह जाएगा। सैद्धान्तिक और नैतिक आचरण से वह अपने जीवन के व्यवहारिक पक्ष को जोड़ने से पीछे रह जाएगा। नैतिकता और सैद्धान्तिकता बालक के सर्वांगीण विकास का आधार होता है जिसे शिक्षा के माध्यम से उन्हें परिचित कराकर उनके व्यक्तित्व में ऐसे संस्कार को सन्निहित और सुशोभित किया जा सकता है। यहाँ पर प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का अध्ययन किया गया है जिसे तालिका संख्या 4.2 के द्वारा दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 4.2

प्राथमिक स्तर पर अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का अध्ययन

शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक	क्रांतिक मान
पुरुष	83	43.58	5.54	1.06
महिला	92	43.68	6.99	

तालिका 4.2 में प्रदर्शित परिणामों का गहनतापूर्वक अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि प्राथमिक पर पुरुष अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का मध्यमान 43.58 है, तथा महिला अध्यापकों का मध्यमान 43.68 है, एवं मानक विचलन क्रमशः 5.54 व 6.99 है, दोनों वर्ग के अध्यापकों के मध्य क्रांतिक अनुपात 1.06 है, जो .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः परिकल्पना नं. 2 "प्राथमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों के सार्थक अन्तर नहीं है," जो स्वीकृत किया जाता है।

आर्थिक मूल्य: वर्तमान समय में भारत के लोग उन्नति के पथ पर चाहे कितनो आगे बढ़ जाए किन्तु अपने कर्तव्यों का पालन वे सही तरह से नहीं कर पा रहे हैं। कार्यालयों, उद्योगों तथा प्रबंध में आदि में आने वाली भारी शिथिलता को कर्तव्यनिष्ठा, लगनशीलता तथा गहरी मेहनत के द्वारा दूर किया जा सकता है। कर्तव्यनिष्ठा को एक नया नाम नैतिकता भी दिया जा सकता है जो अपने कार्यों के प्रति मनुष्य को सजग बनाए रखता है। इन गुणों को ग्रहण करने वाला व्यक्ति अपनी पर्याप्त उपलब्धि से ही संतुष्ट होते हैं और दूसरे का हक को प्राप्त करने की चेष्टा नहीं करते हैं। ऐसे लोग सदैव अपने कार्यों के प्रति सजग रहते हुए आर्थिक उन्नति करते हैं तथा इसमें किसी भी तरह से आर्थिक लाभ की चेष्टा नहीं करते हैं। यहाँ पर प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के आर्थिक मूल्यों का अध्ययन किया गया है जिसे तालिका संख्या 4.3 के द्वारा दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 4.3

प्राथमिक स्तर पर अध्यापकों के आर्थिक मूल्यों का अध्ययन

शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक	क्रांतिक मान
पुरुष	83	40.47	5.66	2.71
महिला	92	38.00	6.51	

तालिका 4.3 में प्रदर्शित परिणामों का गहनतापूर्वक अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि प्राथमिक पर पुरुष

www.ignited.in

अध्यापकों के आर्थिक मूल्यों का मध्यमान 40.47 है, तथा महिला अध्यापकों का मध्यमान 38.00 है, एवं मानक विचलन क्रमशः 5.66 त 6.51 है, दोनों वर्ग के अध्यापकों के मध्य क्रांतिक अनुपात 2.71 है, जो .05 व .01 स्तर पर सार्थक है। अतः परिकल्पना नं. 3 "प्राथमिक स्तर पुरुष एवं महिला अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों के सार्थक अन्तर नहीं है", जो अस्वीकृत किया जाता है।

सौन्दर्यात्मक/कलात्मक मूल्य: भारतीय समाज में आध्यात्मिकता और धर्मपरायणता को सर्वोच्च आदर प्राप्त है। वे हमारी संस्कृति के आधारस्तम्भ है, चाहे भारत का कोई भी धर्मावलम्बी क्यों न हो इन मूल्यों से अपने को पृथक नहीं कर सकता है। इस संबंध में कुछ विकृतियाँ अवश्य आ गई है, इसका एकमात्र कारण लोगों में अध्यात्म और धर्म का वास्तविक ज्ञान का न होना है। अध्यात्म का अर्थ इहलौक की अपेक्षा करके पलायन करना नहीं है। अध्यात्म का अर्थ लौकिक जीवन के स्वार्थमय और भोगवादी दृष्टिकोण को त्यागना और जीवन के रहस्य को जानने की चेष्टा करना है। इसी प्रकार धर्म का अर्थ है एक कर्तव्यनिष्ठा व अनुशासनपूर्ण जीवन व्यतीत करना जिससे सामाजिक जीवन सुखमय बने और मनुष्य शान्ति तथा संतोष प्राप्त कर सके। वर्तमान शिक्षा के द्वारा सौन्दर्यात्म/कलात्मक मूल्यों की प्रतिष्ठा करना एक दुष्कर कार्य है परन्तु भारतीय संस्कृति की आत्मा तो इन्हीं मूल्यों में निवास करती है। यहाँ पर प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के सौन्दर्यात्म/कलात्मक मूल्यों का अध्ययन किया गया है जिसे तालिका संख्या 4.4 के द्वारा दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 4.4

प्राथमिक स्तर पर अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक/कलात्मक मूल्यों का अध्ययन

शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक	क्रांतिक मान
पुरुष	83	37.64	4.29	3.28
महिला	92	40.20	6.08	

तालिका 4.4 में प्रदर्शित परिणामों का गहनतापर्वक अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि प्राथमिक पर पुरुष अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक/कलात्मक मूल्यों का मध्यमान 37.64 है, तथा महिला अध्यापकों का मध्यमान 40.20 है, एवं मानक विचलन क्रमशः 4.29 व 6.08 है, दानों वर्ग के अध्यापकों के मध्य क्रांतिक अनुपात 3.28 है, जो .05 व .01 स्तर पर सार्थक है। अतः परिकल्पना नं. 4 "प्राथमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक/कलात्मक मूल्यों के सार्थक अन्तर नहीं है", को अस्वीकृत किया जाता है।

राजनैतिक मूल्य: भारत ने प्रजातंत्र को स्वीकार किया है तथा यहाँ प्रजातांत्रिक सरकार कायम है। इसलिए यहाँ के नागरिकों को भी कुछ मूल्यों को आत्मसात करना होगा जैसे धर्मनिरपेक्षता जिसका अर्थ धर्म विहिनता न होकर सहिष्णुता है। सब धर्मों के प्रति समान दृष्टिकोण और समान आदर है। ऊँच-नीच, अमीरी-गरीबी, निर्बल और सबल में भेदभाव करने की भावना से ग्रस्त न होकर व्यक्तिगत स्वार्थ से स्वयं को ऊपर उठाकर लोकहित की बात सोचना इसका प्रमुख मूल्य है जिसे प्रजातांत्रिक समाज ने स्वीकार किया है। भारत एक ऐसा देश है जिसमें अनेक धार्मिक, क्षेत्रीय, सांस्कृतिक और भाषायी भिन्नताऐं मौजूद हैं फिर भी सभी में एकता के भाव विद्यमान हैं। यदि नागरिकों की भावनाओं में संकीर्णता आ जाए तो यह राष्ट्र विकास व एकता में बाधाक होगा। यदि नागरिकों को सहयोग व समन्वय के मूल्यों को ग्रहण कराया जाए तो विघटनकारी ताकतों का दमन कर सकते हैं। यहाँ पर प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के राजनैतिक मूल्यों का अध्ययन किया गया है जिसे तालिका संख्या 4.5 के द्वारा दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 4.5

प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों के राजनैतिक मूल्यों का अध्ययन

शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक	क्रांतिक मान
पुरुष	83	44.17	6.00	3.21
महिला	92	41.15	6.47	

तालिका 4.5 में प्रदर्शित परिणामों का गहनतापूर्वक अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि प्राथमिक पर पुरुष अध्यापकों के राजनैतिक मूल्यों का मध्यमान 44.17 है, महिला अध्यापकों का मध्यमान 41.15 है, एवं मानक विचलन क्रमशः 6.00 व 6.47 है, दानों के अध्यापकों के मध्य क्रांतिक अनुपात 3.21 है, जो .05 स्तर पर सार्थक है। अतः परिकल्पना नं. 06 "प्राथमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला अध्यापकों के राजनैतिक मूल्यों के सैद्धान्तिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है", जो अस्वीकृत किया जाता है।

धार्मिक मूल्य: भारत एक विशाल विकासशील देश है जो सैंकड़ों वर्षों की गुलामी के कारण अज्ञान और गरीबी के

महासमुद्र में डूबा रहा है। अब उसे उन्नत राष्ट्रों की पंक्ति में बैठना होगा। यह तभी संभव है जब देश के नागरिकों में मानवीय व वैज्ञानिक प्रवृति उत्पन्न हो जिससे उनमें आलोचना करने, जाँच-पड़ताल करने, विचारों को स्वीकार करने एवं नवीन चिन्तन करने की शक्ति पैदा हो। वे तभी अविश्वासों और सड़ी-गली परम्पराओं से मुक्त हो सकेंगे। शिक्षा पाने के बावजूद भारतीय नागरिक पुराने भावों व विचारों से ग्रस्त हैं। उनकी भावनाओं व विचारों में पूजाभाव व भक्तभाव झलकते हैं। बिना वैचारिक आधार के वह चल नहीं सकता है। इसलिए मूल्य व धार्मिक शिक्षा द्वारा उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित किया जाए ताकि उनमें वैचारिक व मौलिक चेतना भी प्रतिस्थापित हो सके। तभी इस देश में एक जिज्ञासु समाज विकसित हो सकता है और तभी यहाँ नए-नए आविष्कार हो सकेंगे जिनसे समाज और देश समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ सकेगा। धार्मिक दकियानुसी भावना विकास का अवरोधक है। यहाँ पर प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के धार्मिक/आध्यात्मिक मूल्यों का अध्ययन किया गया है जिसे तालिका संख्या 4.6 के द्वारा दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 4.6

प्राथमिक स्तर पर अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों का अध्ययन

शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक	क्रांतिक मान
पुरुष	83	36.83	6.16	1.90
महिला	92	35.08	6.04	

तालिका 4.6 में प्रदर्शित परिणामों का गहनतापूर्वक अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि प्राथमिक पर पुरुष अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों का मध्यमान 36.83 है, तथा महिला अध्यापकों का मध्यमान 35.08 है, एवं मानक विचलन क्रमशः 6.16 व 6.04 है, दोनों वर्ग के अध्यापकों के मध्य क्रांतिक अनुपात 1.90 है, जो .05 स्तर पर सार्थक है। अतः परिकल्पना न. 07 "प्राथमिक स्तर पर पुरुष एवं महिला अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है", जो स्वीकृत किया जाता है।

शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों के समस्त तुलनात्मक मूल्यों का अध्ययन- मानवीय व्यवहार पूरी तरह से मूल्यों पर निर्भर रहता है। उस व्यक्ति के अन्दर कार्य करने की क्षमता तभी विकसित होती है जब उसका व्यवहार मनसा, वाचा एवं कर्मणा तीनों की एकता से आबद्ध होकर एवं सद्भावना से प्रेरित हो। मूल्यों से व्यक्ति का व्यवहार मानवीय और मानवीय व्यवहार से व्यक्ति का जीवन सफल व उच्च बनता है। सामान्य अर्थों में यह भी कह सकते हैं कि व्यक्ति की सफलता का एक राज उसके मूल्य होते है। एक बालक के मूल्यों पर उसकी शिक्षा, उसके बौद्धिक स्तर उसकी व परिवार की समाज में स्थिति का बहुत अधिक प्रत्यक्षतः प्रभाव पड़ता है। अगर बालकों को प्रारम्भ से ही सकारात्मक दृष्टि से मूल्यों की ओर प्रेरित किया जाए और शिक्षा में मूल्यों का समावेश किया जाए तो शिक्षा व शिक्षण अधिगम ज्यादा प्रभावशाली सिद्ध होगा।

उपर्युक्त गुणों/मूल्यों को बालकों के व्यक्तित्व में समाहित करने के लिए योग्य अध्यापकों का होना नितान्त आवश्यक है जिनके व्यक्तित्व में भी समस्त मूल्यों का समग्र सम्मिश्रण होना चाहिए क्योंकि बालक अपने अध्यापकों में निहित गुणों/मूल्यों का अनुकरण करते हैं। ऊपर विभिन्न तालिकाओं यथा 4.1- 4.6 के माध्यम से हमने अध्यापकों के समग्र मूल्यों के साथ-साथ सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक/कलात्मक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों का अवलोकन किया है। तदुपरान्त तालिका संख्या 4.7.1 से 4.7.7 के माध्यम से प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है।

तालिका संख्या 4.7.1

प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों के समग्र मूल्यों का अध्ययन

शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक	क्रांतिक मान
शहरी	83	42.33	5.75	1.72
ग्रामीण	92	40.90	5.30	

तालिका 4.7.1 में प्रदर्शित परिणामों का गहनतापूर्वक अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि प्राथमिक पर ग्रामीण अध्यापकों का मध्यमान 42.33 है तथा शहरी अध्यापकों का मध्यमान 40.90 है, एवं मानक विचलन क्रमशः 5.75 व 5.30 है, दोनों वर्ग के अध्यापकों के मध्य क्रांतिक अनुपात 1.72 है, जो .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः परिकल्पना न. 8 प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण व शहरी अध्यापकों के मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है को स्वीकृत किया जाता है।

तालिका संख्या 4.7.2

प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का अध्ययन

शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक	क्रांतिक मान
शहरी	109	41.86	6.36	5.30
ग्रामीण	66	39.63	5.29	

www.ignited.in

तालिका 4.7.2 में प्रदर्शित परिणामों का गहनतापूर्वक अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि प्राथमिक स्तर पर शहरी शिक्षकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का मध्यमान 41.86 है तथा ग्रामीण अध्यापकों का मध्यमान 39.63 है, एवं मानक विचलन क्रमशः 6.36 व 5.29 है, दोनों के अध्यापकों के मध्य क्रांतिक अनुपात 5.30 है, जो .05 स्तर पर सार्थक है। अतः परिकल्पना न. 9 प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण व शहरी अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है को अस्वीकृत किया जाता है।

तालिका संख्या 4.7.3

प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों के आर्थिक मूल्यों का अध्ययन

शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक	क्रांतिक मान
शहरी	109	42.35	6.13	4.89
ग्रामीण	66	42.82	6.23	

तालिका 4.7.3 में प्रदर्शित परिणामों का गहनतापूर्वक अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि प्राथमिक स्तर पर शहरी अध्यापकों के आर्थिक मूल्यों का मध्यमान 42.35 है तथा ग्रामीण अध्यापकों का मध्यमान 42.82 है, एवं मानक विचलन क्रमशः 6.13 व 6.23 है, दोनों वर्ग के अध्यापकों के मध्य क्रांतिक अनुपात 4.89 है, जो .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः परिकल्पना न. 10 प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के आर्थिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है को स्वीकृत किया जाता है।

तालिका संख्या 4.7.4

प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों का अध्ययन

शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक	क्रांतिक मान
शहरी	109	34.09	7.02	2.72
ग्रामीण	66	36.57	6.49	

तालिका 4.7.4 में प्रदर्शित परिणामों का गहनतापूर्वक अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि प्राथमिक स्तर पर शहरी अध्यापकों के सौन्दर्यतमक/कलत्मक मूल्यों का मध्यमान 34.09 है तथा ग्रामीण अध्यापकों का मध्यमान 36.57 है, एवं मानक विचलन क्रमशः 7.02 व 6.49 है, दोनों वर्ग के अध्यापकों के मध्य क्रांतिक अनुपात 2.72 है, जो .05 स्तर पर सार्थक है। अतः परिकल्पना न. 11 प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के सौन्दर्यतमक/कलात्मक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं को स्वीकृत किया जाता है।

तालिका संख्या 4.7.5

प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों के सामाजिक मूल्यों का अध्ययन

शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक	क्रांतिक मान
शहरी	109	43.11	5.75	0.965
ग्रामीण	66	42.36	4.48	

तालिका 4.7.5 में प्रदर्शित परिणामों का महनतापूर्णक अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि प्राथमिक स्तर पर अध्यापकों के सामाजिक मूल्यों का मध्यमान 43.11 है तथा ग्रामीण अध्यापकों का मध्यमान 42.36 है, एवं मानक विचलन क्रमशः 5.75 व 4.48 है, दोनों वर्ग के अध्यापकों के मध्य क्रांतिक अनुपात 0.965 है, जो .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः परिकल्पना न. 12 प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के सामाजिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है को स्वीकृत किया जाता है।

प्राथमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी अध्यापकों के सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करने के पश्चात यह निष्कर्ष निकाला कि शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के सामाजिक मूल्य समान स्तर के होते है।

तालिका संख्या 4.7.6

प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों के राजनैतिक मूल्यों का अध्ययन

शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक	क्रांतिक मान
शहरी	109	38.24	5.60	2.65
ग्रामीण	66	40.55	5.63	

तालिका 4.7.6 में प्रदर्शित परिणामों का गहनतापर्वक अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि प्राथमिक स्तर पर शहरी अध्यापकों के राजनैतिक मूल्यों का मध्यमान 38.24 है तथा ग्रामीण अध्यापकों का मध्यमान 40.55 है, एवं मानक विचलन क्रमशः 5.60 व 5.63 है, दोनों वर्ग के अध्यापकों के मध्य क्रांतिक अनुपात 2.65 है, जो .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः पकिल्पना न. 13 प्राथमिक स्तर

पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के सामाजिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है को स्वीकृत किया जाता है।

तालिका संख्या 4.7.7

प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों का अध्ययन

शिक्षक	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक	क्रांतिक मान
शहरी	109	38.38	6.97	2.08
ग्रामीण	66	40.21	5.66	

तालिका 4.7.7 में प्रदर्शित परिणामों का गहनतापूर्वक अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि प्राथमिक स्तर पर शहरी अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों का मध्यमान 38.38 है तथा ग्रामीण अध्यापकों का मध्यमान 41.21 है, एवं मानक विचलन क्रमशः 6.97 व 5.66 है, दोनों वर्ग के अध्यापकों के मध्य क्रांतिक अनुपात 2.08 है, जो .05 स्तर पर सार्थक नहीं हैं। अतः परिकल्पना न. प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है को स्वीकृत किया जाता है।

शोध निष्कर्ष

प्राप्त प्राप्तांकों का सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग कर अंकों का विवेचन एवं विश्लेषण किया तथा जिसके निष्कर्ष निम्न प्रकार हैः-

1. **परिकल्पना के अनुसार-** बिजनौर जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत सभी अध्यापकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया अर्थात् दोनों क्षेत्रों के अध्यापकों के धार्मिक मूल्य समान हैं।

2. **परिकल्पना के अनुसार-** बिजनौर जनपद के प्राथमिक स्तर के 35 वर्ष से कम आयु के तथा 35 वर्ष से अधिक आयु की महिला अध्यापकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर है। शहरी क्षेत्र की 35 वर्ष से कम आयु की महिला अध्यापकों का मध्यमान 206.42 है तथा 35 वर्ष से अधिक आयु की महिला अध्यापकों का मध्यमान 199.06 है। इससे स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र की 35 वर्ष से कम आयु की महिला अध्यापकों का धार्मिक मूल्य 35 वर्ष से अधिक आयु की महिला अध्यापकों से अधिक है।

3. **परिकल्पना के अनुसार-** शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों के 35 वर्ष से कम तथा 35 वर्ष से अधिक आयु के पुरुष अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया अर्थात् 35 वर्ष से कम आयु के पुरुष अध्यापकों का धार्मिक मूल्य 35 वर्ष से अधिक आयु के पुरुष अध्यापकों के धार्मिक समान है।

4. **परिकल्पना के अनुसार-** ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों के 35 वर्ष से कम तथा 35 वर्ष के अधिक आयु की महिला अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, अर्थात् दोनों के धार्मिक मूल्य समान है।

5. **परिकल्पना के अनुसार-** ग्रामीण क्षेत्र प्राथमिक विद्यालयों के 35 वर्ष से कम 35 वर्ष से अधिक आयु के पुरुष अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया अर्थात् ग्रामीण क्षेत्र के 35 वर्ष से कम तथा 35 वर्ष से अधिक आयु के पुरुष अध्यापकों के धार्मिक मूल्य समान है।

6. **परिकल्पना के अनुसार-** शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों के 35 वर्ष से कम तथा ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों के 35 वर्ष के कम आयु के अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया अर्थात् 'शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों के 35 वर्ष के कम तथा ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों के 35 वर्ष से कम आयु के अध्यापकों के धार्मिक मूल्य समान है।

7. **परिकल्पना के अनुसार-** शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों के 35 वर्ष से अधिक तथा ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों के 35 वर्ष से अधिक आयु के समस्त अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों के सार्थक अन्तर नहीं पाया गया अर्थात् शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय के 35 वर्ष से अधिक तथा ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों के 35 वर्ष से अधिक आयु के अध्यापकों के धार्मिक मूल्य समान हैं।

8. **परिकल्पना के अनुसार-** शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के 35 वर्ष से कम आयु के पुरुष अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों के सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों क्षेत्रों के 35 वर्ष से कम आयु के पुरुष अध्यापकों के धार्मिक मूल्य समान हैं।

www.ignited.in

9. **परिकल्पना के अनुसार-** शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के 35 वर्ष से अधिक आयु के पुरुष अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के 35 वर्ष से अधिक आयु के पुरुष अध्यापकों के धार्मिक मूल्य समान है।

10. **परिकल्पना के अनुसार-** शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र में 35 वर्ष से कम आयु की महिला अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों में सार्थक अन्तर हैं क्योंकि 'टी' परीक्षण का मान सार्थकता स्तर से अधिक आया तथा मध्यमान (206.42 व 191.78) से स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र के 35 वर्ष से कम आयु की महिला अध्यापक ग्रामीण क्षेत्र के 25 वर्ष से कम आयु की महिला अध्यापकों से अधिक धार्मिक हैं।

11. **परिकल्पना के अनुसार-** शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के 35 वर्ष से अधिक आयु की महिला अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया तथा मध्यमान (206.42 व 191.12) से ज्ञात होता है कि शहरी क्षेत्र के 35 वर्ष से कम आयु की महिला अध्यापकों का धार्मिक मूल्य ग्रामीण क्षेत्र के 35 वर्ष से कम आयु के पुरुष अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों से अधिक है।

12. **परिकल्पना के अनुसार-** शहरी क्षेत्र के 35 वर्ष से अधिक आयु के पुरुष तथा महिला अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया क्योंकि 'टी' परीक्षण का मान सार्थकता स्तर के मान से अधिक है तथा प्राप्त मध्यमान से ज्ञात होता है कि शहरी क्षेत्र 35 वर्ष से अधिक आयु से पुरुष अध्यापकों का धर्म पर विश्वास शहरी क्षेत्र के 35 वर्ष से अधिक आयु की महिला अध्यापकों से अधिक है।

13. **परिकल्पना के अनुसार-** ग्रामीण क्षेत्र के 35 वर्ष के कम आयु के पुरुष तथा महिला अध्यापकों में मूल्यों में सार्थक अन्तर है अर्थात् धार्मिक मूल्य में यह अन्तर लिंग से आधार पर आया है तथा प्राप्त मध्यमानों के आधार पर निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण क्षेत्र के 35 वर्ष से कम आयु के पुरुष अध्यापकों का धार्मिक मूल्य 35 वर्ष से कम आयु की महिला अध्यापकों से उच्च है।

परिकल्पना 1 में प्राथमिक स्तर के महिला व पुरुष अध्यापकों के समग्र मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया, और पाया गया, कि पुरुष अध्यापकों के समग्र मूल्य महिला अध्यापकों से उच्च है। अतः महिला अध्यापकों को इस समस्या के समाधान के लिये उनके समग्र मूल्यों को बढ़ाया जा सकता है, तथा शिक्षण प्रशिक्षण के दौरान उनके पाठ्यक्रम में मूल्यपरक शिक्षण को लगाना चाहिए।

परिकल्पना 2 में प्राथमिक स्तर के महिला व पुरुष अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया और पाया गया कि पुरुष अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः उनके सैद्धान्तिक मूल्यों को बढ़ाने के लिये विद्यालय कार्यक्रम एवं प्रशिक्षण के दौरान उनके पाठ्यक्रम में मूल्यपरक शिक्षण को सम्मिलित करना चाहिए।

परिकल्पना 3 में प्राथमिक स्तर के महिला व पुरुष अध्यापकों के समग्र मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया, और पाया गया कि पुरुष अध्यापकों के आर्थिक मूल्य महिला अध्यापकों से उच्च है। अतः उनके आर्थिक मूल्यों को बढ़ाने के लिये शिक्षण प्रशिक्षण के दौरान उनके पाठ्यक्रम में मूल्यपरक शिक्षण को लगाना चाहिए।

परिकल्पना 4 में प्राथमिक स्तर के महिला व पुरुष अध्यापकों के समग्र मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया, और पाया गया, कि महिला अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक/कलात्मक मूल्य पुरुष अध्यापकों से उच्च है।अतः उनमें सौन्दर्यात्मक/कलात्मक मूल्य बढ़ाने के लिये समय-समय पर उन्हें सौन्दर्यात्मक/कलात्मक मूल्यों की शिक्षा देनी चाहिए।

परिकल्पना 5 में प्राथमिक स्तर के महिला व पुरुष अध्यापकों के समग्र मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन कर यह पाया गया कि, महिला अध्यापकों के सामाजिक मूल्य पुरुष अध्यापकों से उच्च है।अतः उनके सामाजिक मूल्यों को बढ़ाने के लिये वे जिन छात्रों को पढ़ाते है, उनके पाठ्यक्रम में सत्य, पालन, सदाचार, सहयोग, प्रेम, शांति, अहिसा आदि मानव मूल्यों को डालना चाहिए।

परिकल्पना 6 में प्राथमिक स्तर पर महिला व पुरुषों मे समग्र मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया, और पाया गया कि, पुरुष अध्यापकों के राजनैतिक मूल्य महिला अध्यापकों से उच्च है। अतः महिला अध्यापकों की समस्याओं को दूर करने के लिये उनके राजनैतिक मूल्यों का बढ़ाया जा सकता है।

परिकल्पना 7 में प्राथमिक स्तर पर महिला व पुरुषों मे धार्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया, और

पाया गया कि, पुरुष अध्यापकों एवं महिला अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना 8 में प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया, और पाया गया कि शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना 9 में प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया, और पाया गया कि शहरी अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्य ग्रामीण अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों से कुछ उच्च स्तर के है। अतः शहरी अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों को बढ़ाने के लिये, समय-समय पर उन्हें सैद्धान्तिक मूल्यों की शिक्षा देनी चाहिए।

परिकल्पना 10 में प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के आर्थिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया, और पाया गया कि शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के आर्थिक मूल्य ग्रामीण अध्यापकों के आर्थिक मूल्यों से कुछ उच्च स्तर के है।

परिकल्पना 11 में प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक/ कलात्मक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन कर यह पाया गया, कि ग्रामीण अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक/कलात्मक मूल्य शहरी अध्यापकों से उच्च है। अतः शहरी अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक/कलात्मक मूल्य बढ़ाने के लिये समय-समय पर उन्हें सौन्दर्यात्मक/कलात्मक मूल्यों की शिक्षा देनी चाहिये, उन्हें ऐसे स्थानों में ले जाना चाहिये या ऐसी चीजे दिखानी चाहिये, जिनसे उनके मन से सौन्दर्यात्मक/कलात्मक प्रकृति विकसित है।

परिकल्पना 12 में प्राथमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया, और पाया गया कि शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना 13 में प्राथमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के समग्र मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया व पाया कि ग्रामीण अध्यापकों के राजनैतिक मूल्य शहरी अध्यापकों के राजनैतिक मूल्यों से उच्च स्तर के होते है। अतः शहरी अध्यापकों में राजनैतिक मूल्यों को बढ़ाने के लिये समय-समय पर उन्हें राजनैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जानी चाहिए, तथा पाठ्यक्रम में राजनैतिक मूल्यों को महत्व दिया जाना चाहिए, जिससे इस मूल्य को विकसित किया जा सके।

परिकल्पना 14 में प्राथमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया व पाया गया कि ग्रामीण अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों से उच्च स्तर के है। अतः शहरी अध्यापकों के धार्मिक मूल्य बढ़ाने के लिये समय-समय पर उन्हें धार्मिक मूल्यों की शिक्षा देनी चाहिए, उन्हें ऐसे स्थानों पर ले जाना चाहिए या उन्हें ऐसी चीजे दिखानी चाहिये, जिससे उनके मन में दया भाव विकसित हो।

शैक्षिक निहिता

प्रत्येक शोध कार्य में निष्कर्ष के आधार पर शैक्षिक निहितार्थ का विवेचन किया जाता है। ये शैक्षिक निहितार्थ शोध अध्ययन से स्पष्ट शैक्षिक विभिन्नताओं, शिक्षा प्रक्रियाओं की कमियों आदि को दूर करने हेतु दिशा निर्देश प्रदान करते हैं।

- शासकीय स्तर पर मूल्यपरक शिक्षा की चाहे कितनी ही मनोहर योजना बना ली जाए, किन्तु अध्यापक यदि उसे ठीक ढंग से कार्यान्वित न करे, तो वह योजना कदापि सफल नहीं हो सकती। अतः सबसे पहले अध्यापकों में विविध नैतिक, सामाजिक एवं सास्कृतिक मूल्यों का आभ्यान्तरीकरण अन्तयन्त आवश्यक है।

- मूल्यपरक शिक्षा की योजना लागू करने के लिए अध्यापकों को विशेष प्रशिक्षण देना आवश्यक है ताकि वे इस संकल्पना को भली-भाँति आत्मसात् करके इस योजना को सफल बनाने हेतु महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

- मूल्यपरक शिक्षक के विशिष्ट सन्दर्भ में विविध शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों की समीक्षा करने हेतु एक कार्य-समूह की स्थापना की गई थी। इस कार्य-समूह को शिक्षण को मूल्यपरक बनाने के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण के लिए उचित पाठ्यक्रम सुझावे, उसकी अध्यापन-प्रविधियां सुझावे, इस क्षेत्र में ऐच्छिक संगठनों की सहभागिता को प्रेरित करने के उपाय आदि बतावे।

- मूल्यपरक शिक्षण के सन्दर्भ में प्रतिवेदन को तैयार करने में एन. सी. ई. आर. टी. की भूमिका विशेष महत्वपूर्ण रही है। इस कार्य-समूह ने अपने प्रतिवेदन में मूल्यपरक शिक्षण के सन्दर्भ में शिक्षण-प्रशिक्षण में आवश्यक गुणात्मकता एवं

www.ignited.in

श्रेष्ठता समाहित करने हेतु जो अनुशंसाएं प्रस्तुत की थी, अविलम्ब लागू किये जाएं।

- नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आधार पर केन्द्री स्तर पर जो रणनिति तैयार की गई है, उसमें भी राष्ट्र में गिरते हुए विविध जीवन-मूल्यों के प्रति चिन्ता व्यक्ति की गई है। मूल्यों को पुनः प्रतिष्ठा के लिए मूल्यपरक शिक्षण की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया है।

- इस निर्णायक भूमिका के अतिरिक्त, मूल्य शिक्षा की एक गहन ओर ठोस विषयवस्तु हमारी विरासत, राष्ट्रीय और सार्वभौमिक उद्देश्य और विचारों पर आधारित है। इसमें इस पहलू पर मुख्य रूप से दिया जाना चाहिए।

भावी अध्ययन हेतु सुझाव

प्रस्तुत शोध अध्ययन निश्चित समयावधि और निश्चित सीमाओं के दायरे में सम्पन्न किया गया है। इस क्षेत्र में आवश्यकता पड़ने पर बहुत अधिक भावी शोध अध्ययन हो सकते हैं। यहाँ शोधार्थी द्वारा भावी शोध अध्ययन हेतु निम्न सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे हैं:-

- प्रस्तुत शोध में केवल बिजनौर जनपद के प्राथमिक स्तर पर कार्यरत अध्यापकों का अध्ययन किया गया है। जबकि अनुसंधान उत्तर प्रदेश के अन्य जिलों में कार्यरत अध्यापकों पर भी किया जा सकता है।

- विभिन्न मूल्यों का अध्ययन 175 अध्यापकों पर किया गया है आगे इसकी संख्या बढ़ाकर भी शोध कार्य किया जा सकता है।

- बालकों पर अध्यापकों के मूल्य के प्रभाव का भी अध्ययन विषय पर भी शोध कार्य किया जा सकता है।

- वर्तमान शोध विभिन्न मूल्य में किया गया जबकि अन्य क्षेत्र मूल्यों जैसे स्वास्थ्य मूल्य, नैतिक मूल्य, आर्थिक मूल्य आदि पर भी अध्ययन किया जा सकता है।

- मूल्यों का अध्ययन लिंग भेद के विशेष संदर्भ में भी किया जा सकता है।

- प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने प्राथमिक स्तर के अध्यापकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया। ऐसा ही अध्ययन भविष्य में माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर तथा उच्च शिक्षा के स्तर के अध्यापकों पर भी किया जा सकता है।

- उच्च शिक्षा के स्तर पर कार्यरत अध्यापकों के मूल्यों पर भी आगे शोध कार्य किया जा सकता है।

- व्यावसायिक शिक्षा से सम्बंधित विषयों पर भी मूल्य से सम्बंधित शोध कार्य किए जा सकते हैं।

संदर्भ

1. सिंह, मनोज कुमार-शिक्षा और समाज आदित्य पब्लिशर्स, बीमा मध्य प्रदेश 1998

2. मिश्र, करूणाशंकर-मूल्य शिक्षण भारतीय समाज में शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 2005-06

3. नेगी, सुरेन्द्रसिंह- ''नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता, आदित्य पब्लिशर्स मध्यप्रदेश 2000

4. पाण्डे, गोविन्दचन्द्र - ''मूल्य मीमांसा'', राजस्थान हिन्दी जयपुर 1973

5. श्री शरण- ''अभिनव नैतिक शिक्षा'', आधुनिक प्रकाशन दिल्ली 1997

6. ढौलियाल फाटक, - ''शैक्षिक अनुसंधान विधिशास्त्र, राजस्थान हिन्दी सच्चिदानन्द अरविन्द ग्रन्थ अकादमी जयपुर 1982

7. कपिल, एच.के. -''अनुसंधान विधियाँ, हरप्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन, आगरा

8. सरीन एवं सरीन -''शैक्षिक अनुसंधान विधियां'', अग्रवाल, पब्लिकेशन्स, आगरा 2007-08

9. शर्मा, आर.ए. - ''शिक्षा अनुसंधान'', इण्डरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस मेरठ (उ.प्र.) 1985-86

Corresponding Author

Arti Shukla*

Research Scholar, Shri Venkateshwara University, Uttar Pradesh